# ‘उत्तर आधुनिकतावाद के परिप्रेक्ष्य में प्रतिनिधि कथाकारों की कहानियों का अनुशीलन’

## विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

**ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा**

**की पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित**

# शोध-प्रारूप

**संकाय-मानविकी**

**विषय-हिन्दी**


**शोध निर्देशक**

**डॉ० आशीष पाण्डेय**
सहायक प्राचार्य, हिन्दी-विभाग,
समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुर

**शोधार्थी**

**धीरज कुमार**
पैट क्रमांक- 22090126
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

## 1. प्रस्तावित शोध-विषयः

**'उत्तर आधुनिकतावाद के परिप्रेक्ष्य में प्रतिनिधि कथाकारों की कहानियों का अनुशीलन'**

## 2. प्रस्तावना

आधुनिकता का अगला चरण उत्तर-आधुनिकता है, किन्तु उत्तर-आधुनिकतावादी दृष्टि आधुनिकता के गर्भ से उत्पन्न होते हुए भी उसका अतिक्रमण है। पिछले साढ़े तीन सौ वर्षों में आधुनिकता का जो विकास हुआ, उत्तर-आधुनिकता उसी चरम का प्रतिफल है, किन्तु यह निरंतर गतिशील है, इसका कोई केन्द्रवर्ती रूप अभी नहीं बना है, क्योंकि यह विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया है। उत्तर-आधुनिकतावादी व्यवस्था में साहित्य, संस्कृति, दर्शन समाज और मनोविज्ञान को तर्कवादी सिद्धांत का विखंडन करके ही समझा जाता है। उत्तर-आधुनिकता पूँजीवादी विकास की नवीन स्थिति है। इसे एक सामाजिक विचारधारा कह सकते हैं। यह महावृतांतो रामायण, महाभारत, बाइबिल आदि को नकारती है साथ ही वह मूल्य मीमांसा को भी नकारती है। भारतीय साहित्य अभी उत्तर-आधुनिकतावाद से पूर्णतः अक्रांत नहीं हुआ है, तथापि 1990 के आसपास उभरे हुए हिन्दी के कुछ प्रतिनिधि कथाकारों- यथा- उदय प्रकाश, ममता कालिया, रवीन्द्र कालिया तथा मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में इसकी स्पष्ट झलक मिलती है। भूमण्डलीकरण और उपभोक्तावादी संस्कृति के दबार से हम बच नहीं सकते। अतः देर-सबेर यह विचारधारा हिंदी साहित्य में स्थापित हो ही जाएगी, किंतु इसे हम भारतीय परिवेश में ही स्वीकार करेंगें, न कि पाश्चात्य विचारधारा की नकल करेंगे।

## 3. प्रस्तावित शोध-विषय का महत्त्व:

'उत्तर आधुनिकतावाद' के लिए अंग्रेजी में 'पोस्टमाडर्निज्म' (Postmodernism) शब्द का प्रयोग होता है। यह शब्द अपनी अवधारणा को लेकर इतना विवादास्पद हो चुका है कि इसके स्वरूप के बारे में निश्चित विचार प्रस्तुत कर पाना कठिन है। यूरोप के विकसित साम्राज्यवादी देशों की नीतियों के प्रवक्ता, बुद्धिजीवी इसका जो अर्थ देते हैं, तीसरी दुनिया में अथवा उपनिवेश के दंश झेल चुके पिछड़े व विकासशील देशों की जनता के हमदर्द बुद्धिजीवी इसका भिन्न अर्थ करत हैं। एक ही निगाह में उत्तर आधुनिकता, आधुनिकता का अगला चरण है, तो दूसरे की निगाह में आधुनिकता से मुक्ति।

उत्तर आधुनिकतावाद में, कम्प्यूटर युग, दूर-संचार माध्यम, टेक्नोजी के कारण जो नयी स्थितियाँ पैदा हुई है, उन्हीं से उत्तर आधुनिकतावाद चेतना का विकास हुआ है। इसमें तर्क, यथार्थ, इतिहास, रूप सबका नकार है। यह एक अराजकतावादी निहलिस्ट प्रवृति है। अपने यहाँ तो अभी यह सर्वथा नया जीवन-दर्शन है। अगर हम उत्तर आधुनिकतावाद के मूल तत्वों पर विचार करें, तो यह साठ के दशक के उन लिबरेशन आन्दोलनों से निकली है, जिन्होंने व्यक्ति तथा व्यवस्था अल्प समूह तथा वृहत् समाज, विचारों तथा विसंगतियों, मूल्यों तथा विविध-विधान, विचारधाराओं, नीतियों, राजनीति, राष्ट्रीयता आदि पर प्रश्न-चिन्ह् लगा दिये। नारी मुक्ति, अश्वेत रोष, शांति मार्च, युवा-विद्रोह, यौन क्रान्ति और न जाने कितने छोटे-बड़े आन्दोलनां ने विभेदों एवं विकेन्द्रीयता के आन्दोलनों के तहत-समाज तथा संस्कृति को विभिन्न विभाजित स्वायत्त संरचनाओं और इकाईयों में बदल दिया। 1968 एक ऐसा वर्ष है, जो उत्तर आधुनिकतावाद का प्रतिनिधि प्रतीक वर्ष माना जा सकता है। इसी वर्ष फ्राँस में छात्र-विद्रोह हुआ और वर्ग-संघर्ष के बजाय युवा-वर्ग व्यवस्था के विरूद्ध संघर्ष का अग्रिम दास्ता बन गया। इसी समय जाक देरिदा 'अविरचना' (डिंकस्ट्रकशन) का

नारा बुलंद किया था। नवें दशक तक आते-आते उत्तर आधुनिकता का प्रभाव क्षेत्र इतना व्यापक हो गया कि कला, साहित्य, संस्कृति, राजनीति तथा समाजशास्त्र डिस्कोर्स के केन्द्र में आ गई।

सन् 1990 के दशक में हिंदी साहित्य पर उत्तर आधुनिकता का प्रभाव पड़ता है। हिंदी कहानी भी इससे अछूती नहीं रही। जिन कथाकारों पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ा उनमें महत्वपूर्ण है- उदय प्रकाश, कृष्णा सोबती, ममता कालिया तथा रवीन्द्र कालिया।

उत्तर आधुनिकतावाद के संदर्भ में उदय प्रकाश की कहानियों को देखें तो इस संदर्भ में कथाकार उदय प्रकाश अपनी 'आवरण' कहानी में लिखते हैंः-

"जिस दौर में हम जीवित है, उसमें हमारा जीवन चारों ओर से असंख्य, तरह-तरह की कहानियों के बीच घिरा हुआ है। जैसे हम किसी बाढ़ में डूबे हों। या व्यस्त हाइवे पर ट्रैफीक के बीचो-बीच खड़े हों। चारों ओर किस्सों का शोर और जीवन पर उतने ही खतेर। ऐसा इतिहास में कभी नहीं हुआ था। हर रोज, कई-कई बार, हम अलग-अलग कहानियों के पात्र बन जाते हैं या बना दिये जाते हैं, या फिर किसी अन्य को बनता हुआ देखते हैं। कभी कोई यूनानी त्रासदी, कभी संस्कृत की कादम्बरी, कभी कोई विस्मृत जातक कथा कभी किसी विदूषक की कामुदी। किसी गरीब और मामूली आदमी के दुःख से उपजता' उबे और सुखी लोगों का चुटकुला और कभी किसी अखबार या टी०वी० चैनल की न्यूज स्टोरी। किसी दुर्घअना या अपराध की दहशतनाक खबर।'' इस प्रकार वे हमें अपने समय के उन विकराल परिस्थितियों से परिचित कराते हैं। आज के बदलते समय के साथ साक्षात् कराते हैं।

आजकल तेजी से 'ग्लोबलाइजेशन' के कारण समाज में अस्वाभाविक बदलाव दिखाई पड़ रहा है। बदलते जीवन-मूल्य, पश्चिमी रहन-सहन की ललक बढ़ रही है। इस संदर्भ में कथाकार अपनी कहानी 'पाल गोमरा की स्कूटर' में लिखते हैं-

‘‘बाजार अब सभी चीजों का विकल्प बन चुका था। शहर, गाँव, कस्बे बड़ी तेजी से बाजार में बदल रहे थे। हर घर दुकान में तब्दील हो रहा था। बाप अपने बेटे को इसलिए घर से निकाल कर भगा रहा था कि वह बाजार में कहीं फिट नहीं बैठ रहा था। पत्नियाँ अपने पतियों को छोड़-छाड़कर भाग रही थीं, क्योंकि बाजार में उनके पतियों की कोई खास माँग नहीं थी और बिकाऊ और मर्द कमाऊ का महान चकाचक युग आ गया था।’’

इस प्रकार बाजार अब पहले से सभी मिथकों को ध्वस्त करता हुआ नए तरह के आयाम और नयी सोच पैदा कर रहा है। इस तरह के जो नयी सोच और नये आयाम समाज में पनप रही है, वास्तव में वही उत्तर-आधुनिकता की सही पहचान है।

कहानीकार उदय प्रकाश की महत्वपूर्ण कहानी ‘मैंगोसिल’ में भी भूमंडलीकृत स्थिति का चित्रण हुआ है। वे कहते हैं- ‘‘यह सम्पन्नता और समृद्धि का अनैतिक सौन्दर्य वर्तमान समय को अपनी अमानवीय उपस्थिति से ही असुंदर और संदिग्ध बनता रहता है।’’ इसी प्रकार उनकी ‘पीली छतरी’ वाली लड़की’ में भी भूमंडलीकृत स्थिति का चित्रण मिलता है। यह बाजारवाद की नग्नता कुछ इस तरह प्रकट हो रही है-

‘‘मैं बाजार का विरोधी नहीं हूँ, लेकिन मॉर्केट कोइ्र ‘कलक्टिव ड्रीम’ नहीं है। यह कोई यूटोपिया नहीं है। इसमें कोई स्वप्न नहीं देखा जा सकता। इसमें ऐसा कुछ नहीं है, जो उदात्त, विराट और नैतिक हो। मुनाफा, नगदी, लाभ, घाटा......इसके सारे ‘इनग्रेडिएंटस’ क्षुद्र और छोटे हैं। यह लालच, ठगी, होड़, स्वार्थ और लूट-खसोट के मनोविज्ञान से परिचालित होता है।’’ कहने का तात्पर्य यही है कि कहानीकार अपने पात्रों के माध्यम से वर्तमान समय में समाज में जो नयी सोच और नए आयाम विकसित हो रहे हैं, उसके विरूद्ध प्रतिरोध के रूप में दिखाई पड़ता है। वस्तुतः उदय प्रकाश जी ने अपनी कहानियों में ऐसे अनेक प्रसंगों को माध्यम बनाकर बाजारवाद के उपभोक्तावादी संस्कृति के शिकंजे में फँसे मनुष्य की नियति को दर्शाते हैं।

हिन्दी की ख्यातिलब्ध कथा-लेखिका कृष्ण सोबती की कहानियों में उत्तर-आधुनिकतावाद की मुखर अभिव्यक्ति मिलती हैं। ‘बादलों के घेरे’ में उनकी लंबी कथा-यात्रा दृष्टिगत होती है। इसमें कुल 24 कहानियाँ हैं। इन कहानियों को मुख्यतः तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है। पहले वर्ग में वे कहानियाँ आती हैं, जिन्हें आम तौर पर प्रेम और स्त्री-पुरूष संबंधों की कहानियाँ कहा जा सकता है। ‘बादलों के घेरे’ कुछ नहीं, कोई नहीं’, ‘दोहरी साँझ’ ‘पहाड़ो के साये तले’ और ‘दो बाँहे’ आदि इसी वर्ग की कहानियाँ है। इन कहानियों में ही उनकी उन कहानियों के विकास-सूत्र खोे जे जा सकते हैं,जो आगे चलकर ‘मित्रो मरजानी’ और‘ तिन पहाड़’ जैसी कहानियों में पूर्णता पाते हैं। इन कहानियों में, उस दौर के अन्य लेखिका की तरह, एक सैलानी किस्म की युवती को केन्द्र में रखकर, असफल प्रेम की रोमानी और काफी कुछ भावुक लगने वाली स्थितियों को बुना गया है। इन कहानियों का दूसरा वर्ग।

समकालीन महिला लेखन में ममता कालिया का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। ममता कालिया के संग्रह ‘जाँच अभी जारी है’ में पहली ही कहानी ‘सेमिनार’ है। इसमें कहानी की नायिका पाखी एक ऐसी लेखिका है जो या तो कभी ऐसे किसी दोराहे पर पर खड़ी ही नहीं थी या अब उसे पार कर चुकी है। अपने रचनात्मक सरोकारों और कार्यभारों को लेकर उनके मन में कहीं कोई दुविधा नहीं है। सेमिनार में आई एक अन्य लेखिका सुरेखा है जिसके माध्यम से प्रेम, निराशा और संत्रास की स्थिति को दिखलाया गया है। इसके संग्रह ‘प्रतिदिन’ में इस नाम से कोई कहानी नहीं है। उसकी कहानियों की दुनिया पूरे मध्यवर्ग की स्त्री को केन्द्र में रखकर जटिल सामाजिक संरचना में स्त्री की स्थिति और नियति को परिभाषित करना चाहती है। यह एक ऐसे तिलिस्म की मानिंद है, जिसके अंदर वह कितना भी दूर तक घूमने भटकने को आजाद है, लेकिन उसके बाहर निकलने के सारे रास्ते बंद हैं।

दरअसल उत्तर आधुनिक युग में संबंधों में बिखराव आया है, उसकी मुखर अभिव्यक्ति ममता कालिया की कहानियों में मिल जाती है।

रवीन्द्र कालिया भी जीवन की विसंगतियों और विदूपताओं के कहानीकार है और अर्थहीनता के बोध को अलग-अलग संदर्भों में सम्प्रेषित करते हैं। इन विसंगतियों को वे व्यंग्य के माध्यम से उद्घाटित करते हुए हर प्रकार की व्याख्या और स्थापित मूल्यों के अस्वीकार की मुद्रा अपनाते है। महानगर का जीवन उन्हें गहरी ऊब से भरा दिखाई देता है। लेकिन आदमी इसी एकरसता अर्थ-हीनता और ऊब के बीच जीने को अभिशप्त है। उत्तर-आधुनिकतावाद के कारण लोग शहरों नगरों की ओर पलायन करते हैं, जहाँ वह एक बेहतर जीवन का स्वप्न लेकर जाता है, लेकिन अंततः वह अपने जीवन के मूल लय से ही कट जाते है, यांत्रिकता के इस युग में मनुष्य यंत्र मात्र बनकर रह गया है। बाजारवाद ने उसे नफे और नुकसान की तुला पर तौलना आरंभ कर दिया है। 'मैं' 'बड़े शहर का आदमी', 'पचास सौ पचपन' और अकहानी आदि कहानियाँ मान्यता प्राप्त संबंधों और मूल्यों के नकार की कहानियाँ हैं। 'त्रास' संबंधों के बदलाव और उसमें निहित संकट को अपेक्षाकृत गंभीरतापूर्वक व्यक्त करती है। 'नौ साल छोटी पत्नी', 'एक प्रमाणिक झूठ', 'कोजी का ॅर्नर' और 'डरी हुई औरत' आदि कहानियाँ प्रेम और स्त्री ही रविन्द्र कालिया की पहचान माध्यम बनी है। इन्होंने अपनी कहानी में उत्तर-आधुनिकतावादी प्रवृतियों को बखूबी अभिव्यक्त किया है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ वर्तमान समय के चर्चित लेखिका हैं। इन्होंने उत्तर-आधुनिकता को साहित्य में स्थान दिया है। समाज में बदल रही परिस्थितियों एवं व्यक्ति की सोच में आए परिवर्तन को जग जाहिर किया है। आधुनिक में साहित्य में बाहरी दिखावा करने की प्रवृति तीव्रता से बढ़ रही है। इस प्रवृति ने आत्मीय रिश्ते को खोखला बना दिया है। पाश्चात्य जगत की क्षणिक चकाचैंध से आकर्षित होकर युवा वर्ग उस और दौड़ रहे हैं। समाज में प्रत्येक रिश्तों में भी एक दिखावटीपन है वह दिखाई देता है। प्राचीन समय में जहाँ पति-पत्नी का रिश्ता सबसे पवित्र माना जाता था, आज वह भी मात्र

दिखावा बनकर रह गया है। 'क्या यही वैराग्य' कहानी में इसकी झलक देखने को मिलती है। इनकी अधिकांश कहानियों में उत्तर-आधुनिकता की अनुभूति मिलती है। 'प्रेतकामना', 'मास्टरनी' 'कठपुतलियां आदि अनेक कहानियों में उत्तर-आधुनिकतावाद की झलक मिलती है।

निष्कर्षतः उत्तर-आधुनिकतावाद के परिप्रेक्ष्य में अगर इन कहानियों का वर्णन, विवेचन अथवा मूल्यांकन किया जाय, तो यह सर्वथा न्यायसंगत होगा। 1990 के बाद उभरे हुए इन प्रतिनिधि कथाकारों की कहानियों में चाहे-अनचाहे उत्तर-आधुनिकतावाद मिल ही जाती है।

## 4. प्रस्तावित विषय पर शोध कार्य की आवश्यकताः-

प्रस्तावित विषय 'उत्तर-आधुनिकतावाद के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी के प्रतिनिधि कथाकारों की कहानियों का अनुशीलन'' पर शोध कार्य की आवश्यकता इसलिए है, क्योंकि वर्तमान युग उत्तर-आधुनिकतावाद की गिरफ्त में है। इसके सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों परिणाम सामने आ रहे हैं। संकट यह है कि हम चाहकर भी इससे मुक्त या तटस्थ नहीं रह सकते। इसका व्यापक प्रभाव 1990 के बाद के कथाकारों की कहानियों पर दृष्टिगोचर होता है। इसमें प्रतिनिधि कथाकार हें- उदय प्रकाश, ममता कालिया, रवीन्द्र कालिया तथा मनीषा कुलश्रेष्ठ आदि। दरअसल इन कथाकारों की कहानियों का विस्तृत मूल्यांकन उत्तर-आधुनिकतावाद के परिप्रेक्ष्य में नहीं हो पाया है। अतएव, प्रस्तावित शोध विषय पर शोध कार्य की आवश्यकता है।

## 5. पूर्व में किए गए एतद् संबंधी शोध कार्यः-

उत्तर-आधुनिकतावाद के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी साहित्य के अनेक विद्याओं पर पर्याप्त मात्रा में शोध कार्य हो चुका है, तथापि हिन्दी के प्रतिनिधि कथाकारों की कहानियों पर अबतक देश के

किसी भी विश्वविद्यालय में शोध कार्य नहीं हो पाया है। अतएव प्रस्तावित विषय "उत्तर-आधुनिकतावाद के परिप्रेक्ष्य में प्रतिनिधि कथाकारों की कहानियों का अनुशीलन।"

(उदय प्रकाश, ममता कालिया, रवीन्द्र कालिया, मनीषा कुलश्रेष्ठ के संदर्भ में) शोध कार्य के लिए सर्वथा उपर्युक्त विषय है।

## 6. शोध कार्य के स्रोत (आधार ग्रंथ) :-

1. दरियाई घोड़ा (कहानी-संग्रह)- उदय प्रकाश
2. तिरिछ-(कहानी-संग्रह)- उदय प्रकाश
3. और अंत में प्रार्थना (कहानी-संग्रह)- उदय प्रकाश
4. पाल गोमरा का स्कूटर (कहानी-संग्रह)- उदय प्रकाश
5. पीली छतरी वाली लड़की (कहानी-संग्रह)- उदय प्रकाश
6. दत्तात्रेय के दुःख (कहानी-संग्रह)- उदय प्रकाश
7. ओरबा- परेबा (कहानी-संग्रह)- उदय प्रकाश
8. मोहन दास-(कहानी-संग्रह)- उदय प्रकाश
9. छुटकारा- (कहानी-संग्रह)- ममता कालिया
10. एक अदद औरत-(कहानी-संग्रह)- ममता कालिया
11. सीट नंबर छः -(कहानी-संग्रह)- ममता कालिया
12. उसका यौवन-(कहानी-संग्रह)- ममता कालिया
13. मुखौटा-(कहानी-संग्रह)- ममता कालिया
14. निर्मोही-(कहानी-संग्रह)- ममता कालिया

15. थियेटर-(कहानी-संग्रह)- ममता कालिया

16. पच्चीस साल की लड़की (कहानी-संग्रह)- ममता कालिया

18. नौ साल छोटी पत्नी- (कहानी-संग्रह)- रवीन्द्र कालिया

19. गरीबी हटाओ (कहानी-संग्रह)- रवीन्द्र कालिया

20. गली कूंचे (कहानी-संग्रह)- रवीन्द्र कालिया

21. चकैया नीम (कहानी-संग्रह)- रवीन्द्र कालिया

22. जरा सी रोशनी (कहानी-संग्रह)- रवीन्द्र कालिया

23. सत्ताइस साल की उमर तक (कहानी-संग्रह)- रवीन्द्र कालिया

24. क्या यही है वैराग्य (कहानी-संग्रह)- मनीषा कुलश्रेष्ठ

25. कठपुतलियाँ (कहानी-संग्रह)- मनीषा कुलश्रेष्ठ

26. गंधर्व गाथा (कहानी-संग्रह)- मनीषा कुलश्रेष्ठ

27. नई संभावनाओं का आकाश (कहानी-संग्रह)- मनीषा कुलश्रेष्ठ

28. पल्लव- (कहानी-संग्रह)- मनीषा कुलश्रेष्ठ

29. बौनी होती परछाई (कहानी-संग्रह)- मनीषा कुलश्रेष्ठ

30. भाग्यलक्ष्मी (कहानी-संग्रह)- मनीषा कुलश्रेष्ठ

31. लापता पीली तितली (कहानी-संग्रह)- मनीषा कुलश्रेष्ठ

32. लाल डायरी (कहानी-संग्रह)- मनीषा कुलश्रेष्ठ

33. आँखों मं किड़किड़ाते रिश्ते (कहानी-संग्रह)- मनीषा कुलश्रेष्ठ

34. मास्टरनी (कहानी-संग्रह)- मनीषा कुलश्रेष्ठ

## 7. शोध-संबंधी पूर्व कल्पना/ संभावित निष्कर्षः-

प्रस्तावित शोध-प्रबंध- "उत्तर-आधुनिकतावाद के परिप्रेक्ष्य में प्रतिनिधि कथाकारों की कहानियों का अनुशीलन" (उदय प्रकाश, ममता कालिया, रवीन्द्र कालिया, मनीषा कुलश्रेष्ठ के संदर्भ में) की पूर्व कल्पना अथवा संभावित निष्कर्ष को निम्नलिखित रूपों में प्रस्तुत किया जा सकता है-

(i) उत्तर-आधुनिकतावाद का अर्थ निरूपण।

(ii) उत्तर-आधुनिकतावाद और वर्तमान कथा साहित्य के अन्त्तसंबंधों की विवेचन

(iii) 1990 के दशक में तथा उसके बाद के प्रतिनिधि कथाकारों की कहानियों पर उत्तर-आधुनिकतावाद के प्रभावों की समीक्षा

(iv) प्रतिनिधि कथाकार के रूप में उदय प्रकाश, ममता कालिया, रवीन्द्र कालिया तथा मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों का वर्णन-विवेचन और विश्लेषण।

(v) शोध-प्रबंध के अंत में महत्वपूर्ण तथा जीवनोपयोगी निष्कर्षों का प्रतिपादन।

## 8. शोध-प्रविधिः-

सर्वविदित है कि किसी भी शोध कार्य में कुछ निश्चित प्रविधियों का उपयोग किया जाता है। इस शोध-प्रबंध के निर्माण में भी कुछ प्रमुख प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा। इस शोध कार्य में प्रमुख रूप से आगमन, निगमन तथा धीवर प्रविधि का निर्माण किया जाएगा। साथ ही शोधोपयोगी सामग्रियों के संचयन के बाद विश्लेषण और संश्लेषण प्रविधि का सहारा लेकर निष्कर्ष तक पहुँचने की कोशिश की जाएगी। आवश्यकता होने पर साक्षात्कार विधि का भी उपयोग किया जाएगा। इस शोध कार्य को जीवनोपयोगी बनाने हेतु मीडिया के दृश्य-श्रव्य साधनों का भी सहारा अपेक्षित होगा।

## 9. प्रस्तावित अध्यायों का वर्गीकरण:-

**भूमिका**

| | | |
|---|---|---|
| **प्रथम अध्याय** | : | उत्तर-आधुनिकतावाद अर्थ एवं स्वरूप |
| **द्वितीय अध्याय** | : | उत्तर-आधुनिकतावाद एवं समकालीन हिंदी कहानी |
| **तृतीय अध्याय** | : | प्रतिनिधि कथाकारों की कहानियों में उत्तर-आधुनिकता का स्वरूप व प्रभाव |
| **चतुर्थ अध्याय** | : | प्रतिनिधि कथाकारों की कहानियों में हाशिये का समाज और विकेन्द्रीत मूल्य |
| **पंचम अध्याय** | : | उत्तर-आधुनिकतावाद के परिप्रेक्ष्य में प्रतिनिधि कथाकारों की भाषा |
| **षष्ठ अध्याय** | : | उपसंहार |

## 10. संभावित ग्रंथ:-


1 आधुनिक हिन्दी आलोचना के बीज शब्दः- डॉ० बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-1983ई.

2. आधुनिकता और हिंदी साहित्य-डॉ० इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-1973ई.

3. आधुनिकता और हिंदी उपन्यास-डॉ० इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-1981ई.

4. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास-डॉ० बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण-1986ई.

5. आधुनिकता के संदर्भ में हिन्दी कहानी-डॉ० नरेन्द्र मोहन, जयश्री प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-1982ई.
6. आधुनिक परिवेश और अस्तित्ववाद-डॉ० शिव प्रसाद सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, 1988ई.
7. आधुनिक हिन्दी साहित्य-नंद दुलारे वाजपेयी, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, संवत्-’2031वि.
8. आधुनिक हिंदी साहित्य की भूमिका-डॉ० लक्ष्मीसागर वाष्र्णेय, हिन्दी परिषद, प्रयाग, 1993ई.
9. आधुनिक हिंदी साहित्य-डॉ० लक्ष्मीसागर, वाष्र्णेय हिंदी परिषद, प्रयाग-1970ई.
10. आधुनिक हिंदी साहित्य का विकास-श्रीकृष्णलाल, हिन्दी परिषद, प्रयाग-1965ई.
11. आधुनिक हिंदी उपन्यास और मानवीय अर्थवर्ता-डॉ० नवल किशोर प्रकाशन, दिल्ली, 1977ई.
12. आधुनिक और सर्जनशीलता-डॉ० रघुवंश, मैकमिलन, कंपनी, दिल्ली, 1980ई.
13. आधुनिक हिन्दी उपन्यास-ंसपादक भीष्म साहनी, जाकिर हुसैन काॅलेज, दिल्ली, प्रथम संस्करण-1975ई.
14. आधुनिक बोध-दिनकर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1989ई.
15. कथा-विवेचना और गद्य-शिल्प-डॉ० राम विलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-2000ई.
16. कहानीः अनुभव और शिल्प-जैनेन्द्र कुमार, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली,1967ई.
17. कहानीः स्वरूप और संवेदना-राजेन्द्र यादव, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली,1976ई.
18. यर्थाथवाद-डॉ० शिवकुमार मिश्र, मैकमिलन प्रकाशन, दिल्ली, 1978ई.
19. विचारधारा और साहित्य-अमृत राय, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, 1984ई.

20. हिन्दी आलोचना की परिभाषिक शब्दावली-डॉ० अमरनाथ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,1912ई.

21. हिन्दी गद्य साहित्य-डॉ० रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1956ई.

22. हिन्दी साहित्य का इतिहास-रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारणी सभा, काशी, 1929ई.

23. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास-डॉ० बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986ई.

24. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास-डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली,

## संभावित पत्र-पत्रिकाएँ-

1. हंस-दिल्ली-संजय सहाय
2. कथादेश-दिल्ली-हरि नारायण
3. आजकल-नई दिल्ली-सीमा ओझा
4. वागर्थ- शंभुनाथ-कलकत्ता
5. नया ज्ञानोदय-नई दिल्ली-लीलाधर मंडलोई
6. आजकल-नई दिल्ली-सीमा ओझा

**शोध निर्देशक**

**डॉ० आशीष पाण्डेय**
सहायक प्राचार्य, हिन्दी-विभाग,
समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुर

**शोधार्थी**

**धीरज कुमार**
पैट क्रमांक- 22090126
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

**डॉ० आशीष पाण्डेय**

सहायक प्राचार्य, हिन्दी-विभाग

समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुर

Mob. : 9415688515

E-mail : ashishp8515@gmail.com


पत्रांक : .........................                                        दिनांक : .........................

# सहमति–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **धीरज कुमार**, स्नातकोत्तर हिंदी-विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा को प्रस्तावित शोध-प्रारूप **"उत्तर आधुनिकतावाद के परिप्रेक्ष्य में प्रतिनिधि कथाकारों की कहानियों का अनुशीलन (उदय प्रकाश, ममता कालिया एवं रविन्द्र कालिया मनीषा कुलश्रेष्ठ के संदर्भ में)"** विषय पर शोध-निर्देशन देना मुझे स्वीकार है। मेरी जानकारी में इस विषय पर शोध-कार्य संपन्न नहीं हुआ है।

मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

**(आशीष पाण्डेय)**

शोध निर्देशिका

## ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

# उत्तर आधुनिकतावाद के परिप्रेक्ष्य में प्रतिनिधि कथाकारों की कहानियों का अनुशीलन (उदय प्रकाश, ममता कालिया एवं रविन्द्र कालिया मनीषा कुलश्रेष्ठ के संदर्भ में)

## <u>शोध-विषय पर संक्षिप्त विवरण</u>

उत्तर-आधुनिकतावाद, आधुनिकता का अगला चरण है और एक-दूसरे अर्थ में यह आधुनिकता का निषेध है। आधुनिकता ने जहाँ तमाम धार्मिक सांस्कृतिक मान्यताओं को नकार दिया, वहीं उत्तर-आधुनिकता ने विज्ञान और अध्यात्म को एक मंच पर लाकर समन्वय स्थापित किया। यह मूलतः भूमण्डलीकरण और बाजारवाद की परिणति है। उत्तर-आधुनिकता ने महावृतांत का विरोध किया तथा अस्मितावादी आंदोलन का समर्थन किया। हिन्दी में अनेक प्रतिनिधि कथाकारों की कहानियों पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ा है, जिसमें उदयप्रकाश, ममता कालिया, रवीन्द्र कालिया तथा ममता कुलश्रेष्ठ का नाम महत्वपूर्ण है। इन रचनाकारों ने समस्त उत्तर-आधुनिकतावादी प्रवृत्तियों को अपनी कहानियों में उतारा है।

**शोध निर्देशक**

**डॉ० आशीष पाण्डेय**
सहायक प्राचार्य, हिन्दी-विभाग,
समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुर

**शोधार्थी**

**धीरज कुमार**
पैट क्रमांक- 22090126
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा